दिनांक: 26 अगस्त 2025

12वाँ दीक्षांत समारोह
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान पटना

माननीय श्री बी आर शंकरानंद जी, राष्ट्रीय संगठन मंत्री भारतीय शिक्षण मंडल का उदबोधन..

भारत सरकार के आदरणीय शिक्षा मंत्री माननीय धर्मेंद्र प्रधान जी, भारत सरकार के आदरणीय गृह राज्य मंत्री माननीय नित्यानंद राय जी, भारत सरकार के आदरणीय मंत्री माननीय गिरिराज सिंह जी, चेयरमैन एंड मेंबर्स ऑफ द बोर्ड ऑफ गवर्नर्स आईआईटी पटना, डायरेक्टर आईआईटी पटना एंड प्राउड पेरेंट्स एंड गार्डियंस एंड माई डियर यंग फ्रेंड्स, द ग्रेजुएट्स ऑफ 12th कॉन्वोकेशन ऑफ आईआईटी पटना। आप सभी को मेरा सादर प्रणाम समर्पित करता हूं।

आज मुझे इस भव्य और दिव्य कार्यक्रम में आपके सामने खड़े होकर कुछ विचार प्रस्तुत करने का अवसर मिला है। इसीलिए मैं बहुत आनंदित हूं और गर्व महसूस कर रहा हूं। टुडे इज द मोमेंट ऑफ रिमारकेबल अचीवमेंट इन योर लाइफ। सो फ्रॉम द बॉटम ऑफ माय हार्ट, आई कांग्रेचुलेट यू। द एजुकेशन वी हैव रिसीव्ड इन आईआईटी पटना इज ऑफ ग्लोबल स्टैंडर्ड्स बट सच स्टैंडर्ड एजुकेशन इज आल्सो इनकंप्लीट विदाउट वैल्यूस। सो वी नीड अ स्ट्रांग फाउंडेशन ऑफ कल्चरल वैल्यूस। द टू एजुकेशन इज अ ब्यूटीफुल ब्लेंड ऑफ मॉडर्न एक्सपर्टाइज एंड टाइमलेस विज़डम। दिस विल एमवर अस टू फाइंड द सशंस दैट आर द टेक्नोलॉजिकली साउंड एंड डीपली रूटेड इन भारतीय एथोस। सो वी हैव टू अप द स्पिरिट ऑफ सेल्फलेस सर्विस ए कासेट ऑफ डीपली एंबेडेड इन आवर कल्चर यानी भारत को हमें आत्मनिर्भर बनाना है। इसमें हम सभी जो छात्र यहां आज उपस्थित हैं हमारी भूमिका अहम है। हमारा सोच ऐसी होनी चाहिए कि मैं जो भी करूंगा देश के हित में ही करूंगा। चाहे मुझे ऐसा करने के लिए रिस्क ही क्यों ना लेना पड़े, अपमान सहन करना पड़े। राष्ट्र सर्वोपरि, इसी नीति को अपनाना होगा।

हम बहुत भाग्यशाली हैं कि अमृत काल से जब भारत गुजरता हुआ जा रहा है। ऐसे समय में हम युवा हैं और ऐसे श्रेष्ठ संस्थान से शिक्षा प्राप्त किए हैं। इस दृष्टि को अपनाते हुए वर्तमान ज्ञान का भारतीयकरण करना बहुत आवश्यक है यानी शिक्षा में शिक्षा की भारतीयकरण, दूसरे टेक्नोलॉजी का स्वदेशीकरण हमको करना बहुत आवश्यक है यानी अपने रिसर्च के माध्यम से भारत की निर्भरता एवं विदेशों के ऊपर न्यूनतम निर्भर करना पड़ेगा। तीसरी दृष्टि यह होनी चाहिए कि उद्योग का वैश्वीकरण यानी लोकल को ग्लोबल लेवल तक ले जाना होगा। इसीलिए हम सभी नौकरी करने वाले ना बने, अपितु नौकरी देने वाले बने, यही अपेक्षा है।

सो वी हैव टू कंसंट्रेट ऑन कोर इंजीनियरिंग फील्ड एंड रिसर्च। टू द बेस्ट आवर के बेस्ट ऑफ़ आवर कैपेबिलिटीज। वी हैव टू कंट्रीब्यूट इन रिसर्च इन इंजीनियरिंग टू सॉल्व द प्रॉब्लम्स ऑफ द सोसाइटी एंड द कंट्री। जब आक्रानता हमारे देश के ऊपर आक्रमण कर रहे थे उस समय आर्य समाज के दयानंद सरस्वती जी ने कहा था "ए क्लेरियन कॉल टू द होल नेशन दैट गो बैक टू द वेदास।" इसका मतलब है "गो बैक टू द रूट्स" जड़ों से जुड़े बिना भारत का उत्थान नहीं हो सकता है।इसीलिए आज संस्कृत में हमने जो प्लेज किया, संकल्प लिया वह बहुत महत्वपूर्ण है। इसीलिए भारत को जाने बिना हम भारत का उत्थान नहीं कर सकते। भारतीय बने बिना भारत का उत्थान नहीं कर सकते। इसीलिए "गो बैक टू द वेदास" इसका मतलब है अभी वर्तमान में भारतीय बनना चाहिए और भारत को जानना चाहिए। भगवत गीता में कृष्ण दूसरे अध्याय में और एक संदेश हमें देते हैं। वह भी वर्तमान में बहुत महत्वपूर्ण है। ऐसा मुझे लगता है कि उसको अपनाना भी- निर्द्वंद नित्य सत्वस्थो निर्योगक्षमात्मवान।

रामकृष्ण मठ के स्वामी रंगनाथानंद जी इसका इंटरप्रिटेशन ऐसे करते हैं- गो बियोंड द वेदास। एक कह रहे हैं- "गो बैक टू द वेदास", जड़ों से जुड़ो। श्री कृष्ण गीता के माध्यम से कह रहा है। उसका इंटरप्रिटेशन रंगनाथानंद जी "गो बियोंड द वेदास" यानी ग्रंथों को अध्ययन करते हुए उस सारे तत्वों को अपनाते हुए, व्यवहार में लाते हुए, जब हम आगे बढ़ेंगे तो चलता फिरता ग्रंथ बन जाएंगे। स्वयं ग्रंथ बन जाएंगे यानी किसी एक ग्रंथ को पकड़ के लटकते मत रहो। ग्रंथ से परे हो जाओ यानी इंटेलेक्चुअल अवस्था में पार एक्सीलेंस तक हमको पहुंचना चाहिए। बुद्धि की अंतिम अवस्था तक यानि श्रेष्ठ अवस्था तक पहुंचना चाहिए। बुद्धि की श्रेष्ठ अवस्था रिसर्च से ही आती है। यह बुद्धि की चरम सीमा है। छह चरण हैं- श्रद्धा, मेधा, प्रतिभा, प्रज्ञा, धति और धी। इन सारे बुद्धि के विकास में श्रद्धा ही नींव है। श्रद्धा के बिना जब बुद्धि का विकास होता है तो विनाश ही होता है। इसीलिए श्रद्धा के आधार पर बुद्धि का विकास करते हुए भारत का उत्थान हमारी ओर से होना है। इसीलिए भारत का कल्याण इसके माध्यम से विश्व कल्याण। इसके लिए हम इस दिव्य और भव्य कार्यक्रम का दो संदेश लेते हुए चलना चाहिए, ऐसा मुझे लगता है। इन्हे हमे अपने जीवन में अपनाना चाहिए।

"आर्ट ऑफ लविंग" भारत के साथ प्रेम आस-पास रहने वाले लोगों के साथ हमारा प्रेम प्रत्येक समस्या को समाधान की ओर ले जाने के लिए प्रेम ही आधार बन जाता है। आर्ट ऑफ लविंग मींस शेयरिंग एंड केयरिंग। शेयरिंग एंड केयरिंग के माध्यम से ही प्रेम प्रकट होता है। इसके कारण ही एक स्वस्थ समाज का निर्माण होता है। "वी हैव टू इनवॉल्व आवर सेल्फ्स इन डेवलपिंग ए से सोसाइटी" इसके कारण ही अथर्व वेद में एक संदेश दिया गया है- "यत्र विश्वम भवत नीडम यानी वसुधैव कुटुंबकम" यानी पूरा विश्व को एक परिवार के रूप में देखते हुए विश्व कल्याण की ओर जाना ही भारत का जन्म का उद्देश्य है। इसको साकार करने के लिए, इसको सार्थक करने के लिए हम सभी प्रयास करें।
इतना ही विनम्र निवेदन आप सभी के सामने रखते हुए मेरी वाणी को विराम देता हूं।
नमस्कार।

*****